# BHAJAN

# CD 04

# PRARTHNA PUSHPANJALI

## नैन हीन को राह दिखा प्रभु

नैन हीन को राह दिखा प्रभु,
पग पग ठोकर खाऊँ मैं ॥

तुम्हरी नगरिया की कठिन डगरिया,
चलत चलत गिर जाऊँ मैं ॥
नैन हीन को . . .

चहुँ ओर मेरे घोर अन्धेरा,
भूल न जाऊँ मैं द्वार तेरा,
एक बार प्रभु हाथ पकड़ लो,
मनका दीप जलाऊँ मैं ॥
नैन हीन को . . .

बसे रहो श्री राम

बसे रहो श्री राम,
मन में नैन मून्द सुख पाऊँ,
बसे रहो श्री राम ॥

न मन्दिर न तीरथ जाऊँ,
घट में दर्शन पाऊँ तेरो,
घट में दर्शन पाऊँ ॥
बसे रहो श्री राम . . .

जप तप योग जतन नहीं जानूँ,
तेरो ही ध्यान लगाऊँ,
मन में तेरो ही ध्यान लगाऊँ ॥
बसे रहो श्री राम . . .

तोड़ के जग के झूठे बन्धन,
तुमसों प्रीत लगाऊँ, मन में,
तुमसों प्रीत लगाऊँ ॥
बसे रहो श्री राम . . .

मेरे मन में तू बसे,
मेरे मोहन राम,
तेरे मधुर मिलाप से,
मिले मुझे विश्राम ॥
बसे रहो श्री राम . . .

## मुझ पे इतनी कृपा बस विधाता रहे

मुझ पे इतनी कृपा बस विधाता रहे,
राम का नाम होठों पे आता रहे ॥

भोर से साँझ तक राम का ध्यान हो,
हर तरफ राम है बस यही ज्ञान हो,
राम को ही हृदय ये बुलाता रहे,
राम का नाम होठों पे आता रहे ॥

राम में ही सदा मैं लगाऊँ लगन,
राम की ही कथा में रहूँ मैं मगन,
राम चरणों से ही मेरा नाता रहे,
राम का नाम होठों पे आता रहे ॥

राम को ही ये रसना पुकारा करे,
राम को ही ये नैना निहारा करें,
राम के गीत ही कंठ गाता रहे,
राम का नाम होठों पे आता रहे ॥

## हे दयामय दीनबन्धु

हे दयामय दीनबन्धु, दीन को अपनाईये ।
डूबता बेड़ा मेरा, मझधार पार लँघाइये ॥

नाथ तुम तो पतितपावन, मैं पतित सबसे बड़ा ।
कीजिये पावन मुझे, मैं शरण में हूँ आ पड़ा ॥

तुम गरीबनवाज हो, ये जग सारा कह रहा ।
मैं गरीब अनाथ हूँ, नित दुःखप्रवाह में बह रहा ॥

इस गरीबी से छुड़ाकर, कीजिये मुझको सनाथ ।
तुमको पाकर नाथ मैं, फिर क्यूँ कहाऊँ मैं अनाथ ॥

अब नहीं ऐसा उचित, प्रभु कृपा मुझपर कीजिये ।
पापका बन्धन छुड़ा नित-शांति मुझको दीजिये ॥

## मैं पतित पुरातन तेरी शरण

मैं पतित पुरातन तेरी शरण,
निज जान मुझे स्वीकार करो,
हूँ कब कब का साथी तेरा,
युग युग का हल्का भार करो ।।

दोहा- भक्ति भावना हीन हूँ, ज्ञान ध्यान से हीन
पर तव द्वार का भिक्षु मैं, हूँ तेरा जन दीन

मैं भिक्षुक हूँ दातार हो तुम,
यह नैय्या खेवनहार हो तुम ।
इस पार हो तुम, उस पार हो तुम,
चाहो तो बेड़ा पार करो ।।
मैं पतित पुरातन तेरी शरण . . .

मैं कुछ भी भेंट नहीं लाया,
बस खाली हाथ चला आया ।
अब तक तो तुमने भरमाया,
पर गुपचुप न हर बार करो ।।
मैं पतित पुरातन तेरी शरण . . .

मैं चल न सकूँ तेरी ऊँची डगर,
हाय, झुक न सके मेरा गर्वित सिर ।
'निर्दोषकहूँ मैं , सौ सौ बर,
प्रभु अपनी कृपा इस बार करो ।।
मैं पतित पुरातन तेरी शरण . . .

## करूणा करो मोरे राम

करूणा करो मोरे राम,
निसदिन जपत हूँ तुमरो नाम ॥

अब मैं आयो शरण तिहारी,
नाम लेत भव पार उतारो ॥१॥
करूणा करो मोरे राम . . .

तुम सबके प्रभु पालन हारे,
करो नईया अब पार मोरी ॥२॥
करूणा करो मोरे राम . . .

## मेरे स्वामी अंतर्यामी

मेरे स्वामी अंतर्यामी,
तू सब के मन की जाने,
मैं किसको जाऊँ सुनाने ॥१॥

कैसे हैं ये रिश्ते नाते, कौन यहाँ है अपना,
झूठा जग का है ये बन्धन, झूठा है ये सपना,
मैं आया तुम्हें मनाने ॥२॥

तेरा हर पल ध्यान धरूँ मैं, कष्ट हरो प्रभु मेरे,
नाथ मेरे अब मुझे उबारो, द्वार पड़ा हूँ तेरे,
मैं आया तुम्हें रिझाने ॥३॥

जन्म जन्म का नाता तुमसे, अब तक न था जाना,
हर द्वारे पर ठोकर खाके, दामन तेरा थामा,
मेरे छूटे सभी ठिकाने ॥४॥

## मेरे मन मन्दिर में राम बिराजें

मेरे मन मन्दिर में राम बिराजें,
ऐसी जुगति करो हे स्वामी ।

अधिष्ठान मेरा मन होवे,
जिसमें राम नाम छवि सोहे ।
आँख मूंद के दर्शन होवे,
ऐसी जुगति करो हे स्वामी ॥

मेरे मन मन्दिर . . .

सांस सांस गुरु मंत्र उचारुं,
रोम रोम से तुम्हे पुकारुं ।
आँखिन से बस तुम्हे निहारुं,
ऐसी जुगति करो हे स्वामी ॥

मेरे मन मन्दिर . . .

औषधि राम नाम की खाऊँ,
जनम मरन के दुख बिसराऊँ ।
हंस हंस के तेरे घर जाऊँ,
ऐसी जुगति करो हे स्वामी ॥

मेरे मन मन्दिर . . .

बीते कल का शोक करुँ ना,
आज किसी से मोह करुँ ना ।
आने वाले कल की चिन्ता,
नही सताये हमको स्वामी ॥

मेरे मन मन्दिर . . .

राम राम भज कर श्रीराम,
करें सभी जन उत्तम काम।
सबके तन हों साधन धाम,
ऐसी जुगति करो हे स्वामी ॥

मेरे मन मन्दिर . . .

आँखें मूंद के सुनु सितार,
राम राम सुमधर झंकार।
मन में हो अमृत संचार,
ऐसी जुगति करो हे स्वामी ॥

मेरे मन मन्दिर . . .

## इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले ।
गोविन्द नाम लेकर, फिर प्राण तन से निकले ॥

गंगा जी का तट हो, यमुना का बंसीबट हो,
मेरा सांवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकले ॥
इतना तो करना स्वामी . . .

वृन्दावन का स्थल हो, मेरे मुख में तुलसि दल हो,
विष्णु चरण का जल हो, जब प्राण तन से निकले ॥
इतना तो करना स्वामी . . .

आना ज़रूर आना, राधे को साथ लाना,
मुरली की धुन सुनाना, जब प्राण तन से निकले ॥
इतना तो करना स्वामी . . .

ये नेक सी अरज है, मानो तो क्या हरज है,
कुछ आपका फरज है, जब प्राण तन से निकले ॥
इतना तो करना स्वामी . . .

## तुम मेरी राखो लाज हरि

तुम मेरी राखो लाज हरि,
तुम जानत सब अंतरजामी, करनी कछु न करी ॥

औगुन मोते बिसरत नाहीं, पल छिन घरी घरी,
सब प्रपंचकी पोट बाँधि कै, अपने सीस धरी ॥

दारा-सुत-धन मोह लिये हैं, सुधि-बुधि सब बिसरी,
सूर पतित को बेग उधारो, अब मेरी नाव भरी ॥

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी,
हे नाथ नारायण वासुदेवा